अध्याय प्रथम

शोध परिचय

अध्याय–प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

शुद्व वायु जल भोजन दुलर्भ बड़ा प्रदूषण का अधिकार,
प्राकृतिक संसाधन विनाशे अस्त व्यस्त जन जीवनधारा।
पर्यावरण स्वच्छ हो ऐसी संरचना करती है,
धरतीः के कण–कण में हमको सुरक्षित हरियाली भरती है।

साधारणतः कोई भी व्यक्ति यह प्रश्न पूछ सकता हैं कि पर्यावरण क्या है? आइनस्टीन ने एक बार कहा था कि मुझे छोड़कर और सभी पर्यावरण है। अन्य शब्दों में हम कह सकते है कि "प्रत्येक व्यक्ति के बाहर उपस्थित सभी के अंतिम विश्लेषण को पर्यावरण कहते है"। वह विश्व जिसमें हम रहते हैं व जिसका हम भाग है इसे ब्रम्हांड (COSMOS) कहते है।

हमारे ब्रम्हांड में वायु, जल, मृदा, सूर्य, चंद्रमा तथा अन्य ग्रह होते है। इसमें पौधे, प्राणी, नदी, पहाड़, मरूस्थल तथा महासागर आते है। कुल मिलाकर सभी प्रकृति को बनाते है यह प्रकृति जिसमें हम सभी जुड़े है हमारा पर्यावरण है।

पर्यावरण को समझने का अन्य तरीका हैं इसे भौतिक, रासायनिक तथा जैविक पर्यावरण में वर्गीकृत करना। भौतिक पर्यावरण के अन्तर्गत विकरण (प्रकाश), तापमान (उष्मा) आर्द्रता तथा वर्षा आते है। रासायनिक पर्यावरण में जल, गैस, अम्ल, अकार्बनिक तत्व तथा कार्बनिक पदार्थ आते है। जबकि जैविक पर्यावरण के अन्तर्गत पृथ्वी पर पाये जाने वाले सभी जीव जन्तु आते है। ये जीवाणु, विषाणु, रोगाणु, कवक, शैवाल शाक, झाड़ी फसलें, बड़े वृक्ष, कीट, मछली, सांप तथा स्तनधारी हो सकते है। पृथ्वी गृह पर जीवित अन्याश्रित भौतिक, रासायनिक व जैविक प्रक्रम विकृति के लिए उत्तरदायी है, इस तरह हम पायेगें कि पर्यावरण में सभी कुछ प्रत्येक से जुड़ा है। मानव ने पर्यावरण को सदैव प्रदूषित किया हैं। वायु मंडल एवं स्थलमंडल सभी प्रदूषित हो रहे है।

जलमंडल एवं स्थलमंडल को प्रदूषित करने में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं औद्योगीकरण ये दोनों तत्व अति महत्वपूर्ण हैं जनसंख्या वृद्धि की मांग की पूर्ति हेतु औद्योगीकरण आवश्यक है। नये उद्योगों की स्थापना एवं संचालन से अवशिष्ट रासायनिक पदार्थ एवं अवशिष्ट में प्रवाहित कर जल को दूषित करते है।

वायु मंडल को प्रदूषित करने में 46% भाग केवल परिवहन साधनों का है। वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों के प्रचुर मात्रा में प्रयोग होने के कारण ओजोन परत में छिद्र हो गया है। जिसके कारण सूर्य की पराबैगनी विकिरणे सीधे पृथ्वी पर पड़ रही हैं जिससे वातावरण का तापमान बढ़ रहा हैं । जो मानव जाति हेतु विकट

संकट हैं। औद्योगीकरण से पर्यावरण में सार्वत्रिक उष्णता (GLOBAL WARMING) एक विकट समस्या हैं। सार्वत्रिक उष्मा से आशय हैं भूमंडल का गरम होना । मीथेन, क्लोरो–फ्लोरो कार्बन, जीवाश्म ईधन, सल्फर हैक्सा फ्लोराईड आदि गैसें लगातार बढ़ रही हैं सांद्रता के कारण वंसुधरा का तापमान बढ़ रहा है। इसके कारण संपूर्ण विश्व पर जो पर्यावरणीय प्रभाव पड़ रहा हैं उसे ग्लोबल वार्मिंग कहते है।

पर्यावरण सुरक्षा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। दोनों की ही वजह से एक दूसरे का महत्व प्रतिपादित हैं पृथ्वी पर जो संतुलन हो रहा हैं उसे बनाये रखने का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व भी मानव समाज का है पर हम भी जानते हैं की कोई नहीं स्वयं मानव समाज ही जिम्मेदार है।

अतः पर्यावरण को संतुलित रखना हमारा कर्त्तव्य है। प्रदूषित पर्यावरण को संतुलित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा को सामान्य जन तक पहुँचाना आवश्यक एवं अनिवार्य है। पर्यावरण शिक्षा को प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचाकर उसे पर्यावरणीय साक्षर बनाना आवश्यक है। क्योंकि व्यक्ति के विकास में वातावरण की प्रमुख भूमिका होती हैं चारों ओर का वातावरण जिनके अंदर पशुओं, जीवों तथा व्यक्ति के विकास, रहन सहन तथा कार्य करने की प्रक्रिया सम्मिलित होती है। यह पर्यावरण जिनमें सब सम्मिलित किया जाता हैं जो बालक के जीवन शैली को प्रभावित करता है।

1.2 पर्यावरणीय शिक्षा

पर्यावरण कि गुणवत्ता के गिरते हुए स्तर के कारण अनेक देशों में यह विचार किया गया हैं कि पर्यावरणीय शिक्षा का अधिक से अधिक विस्तार किया जाना चाहिए। पर्यावरणीय अध्ययन मशीनी पर्यावरण के अध्ययन और कुशलताओं के विकास पर अधिक जोर देना है। जबकि पर्यावरणीय शिक्षा में पर्यावरण के संबंध में ज्ञान इससे जुड़ी समस्याओं की बहु आयामी विवेचना ओर इसके संभव हल खोजने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। सन् 1965 में जर्मनी के कील विश्वविद्यालय में शिक्षा–सम्मेलन में पहली बार पर्यावरणीय शिक्षा शब्दों का उपयोग किया गया और यह भी सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया है पर्यावरण शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है।

पर्यावरणीय शिक्षा देने का सही समय क्या है? तथा किस स्तर पर उच्च प्राथमिकता प्राप्त होती हैं क्या विश्व में पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम साझा होना चाहिए।

इन सिफारिशों पर कार्य करते हुए यूनेस्को (UNESCO) तथा यु.एन.डी.पी. (UNDP) ने जनवरी 1975 में पर्यावरणीय शिक्षा का अन्तराष्ट्रीय कार्यक्रम शुरु किया। इसके लक्ष्य थे–

- पर्यावरणीय शिक्षा से जुड़े मतो की जानकारी के अन्तराष्ट्रीय विनिमय को बढ़ाना।

- पर्यावरणीय शिक्षा के अन्तराष्ट्रीय कार्यक्रम के विकास को बढ़ाने के लिए जरूरी समवर्गीकरण संयुक्त योजना कार्यक्रम पूर्ण क्रियाओं को आसान करना।
- उपदेश तथा अध्ययन में विभिन्न परिघटना को उचित रूप से समझने के लिए अनुसंधान चलाना।
- पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रमों के लिये अच्छे व पर्याप्त वर्ग को प्रशिक्षित करना।
- पर्यावरणीय शिक्षा में नई विधियों, पदार्थो तथा कार्यक्रमों की व्यवस्था तथा मूल्यांकन।
- पर्यावरण के सभी घटक महत्वपूर्ण हैं तथा एक दूसरे पर निर्भर करते हैं।
- मानव तथा पर्यावरण एक दूसरे पर निर्भर करते है तथा मानव को पर्यावरण से अलग नहीं किया जा सकता ।
- पर्यावरण कि गुणवत्ता शांति, विकास आदि अनेक सर्वव्यापी बातों पर निर्भर करती है।

पर्यावरण की संरचना मानव तथा पर्यावरण के बीच जटिल संबंध पर निर्भर करती हैं।

पर्यावरणीय शिक्षा भी अन्य विषयों जैसे गणित, भूगोल, सामाजिक अध्ययन, भौतिकी, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि अनेक विषयों पर निर्भर करती हैं। इस कारण इसकी शिक्षा बहु–विषयक हो सकती हैं। बहु विषयक विद्या में इसकी धारणाओं

को विभिन्न विषयों कि धारणाओं के साथ समन्वित किया जाता हैं। इस विद्या के विपरीत अंत विषयक विद्या में पर्यावरण शिक्षा एक स्वतंत्र विषय कि तरह कार्य करती हैं जो विभिन्न विषयों के ज्ञान और धारणाओं पर निर्भर हैं इसमें सर्वागीण विकास हो जाता है।

शैक्षिक विषयों के साथ-साथ सहशैक्षिक विषयों का ज्ञान दिया जाता हैं जो इस प्रकार है-

कला शिक्षा

कला के आधार पर पर्यावरण शिक्षा में वृद्धि हो उसे नया क्षेत्र मिले इसे पर्यावरण से संबंधित कला के माध्यम से नई तकनीकी विकास शिक्षण के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वकारी सिद्ध हुआ है। यह पर्यावरण कि उपयोगिता बताने में सहयोग करता है।

कार्य शिक्षा

कार्य शिक्षा में विशेष ध्यान पर्यावरण संरक्षण पर दिया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण की अपने दैनिक कार्यो के साथ साथ पर्यावरण की सुरक्षा करना। पर्यावरण संरक्षण का सबसे अच्छा उदाहरण हैं प्लास्टिक के उपयोग पर रोक करना ।

स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा

शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से बालकों को ऐसी क्रियाओं में रखा जाता हैं जो कि उसके शारीरिक अंगों को स्वास्थ्य बनाने

का कार्य नहीं करते वरन् बच्चों के मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक गुणों के विकास में भी योगदान प्रदान करते हैं। अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ पर्यावरण कि आवश्यकता होती है। और स्वस्थ्य पर्यावरण का निर्माण अभिवृत्ति से होता हैं। अतः शारीरिक स्वास्थ्य के लिए पर्यावरण शिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मूल्य शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से भी कुछ मूल्य विकसित किये हैं जिससे कि मनुष्य का व्यवहार उसकी नीतियॉ और समर्थन ऐसा हो जो पर्यावरण संरक्षण में सहायक हो पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों में मूल्यांकन करने कि क्षमता एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। पर्यावरण से संबंधित मूल्यों में प्रकृति के प्रति प्रेम जीव जन्तुओं की रक्षा करना ओर पेड. लगाना पर्यावरण संरक्षण करना, किसी ऐसे कार्य में भाग न लेना जो पर्यावरण दूषित करता हो। अहिंसा को व्यवहार में लाना आदि।

1.2.1 पर्यावरण शिक्षा से संबंधित उद्देश्य

पर्यावरण शिक्षा पर बिलसी यू.एम.आर.(1977) ने सरकारी सभा में 6 उद्देश्यों को सूचित किया गया।

1. जागरूकता

पर्यावरण तथा इसमें जुड़ी समस्याओं की संवेदनशीलता के प्रति लोगों को जागरूक करने में सहायता प्रदान करना ।

2. ज्ञान

लोगों को पूरे पर्यावरण तथा इससे जुड़ी समस्याओं के बारे में समझाना तथा मानवता की दोषपूर्ण उत्तरदायी उपस्थिति तथा उसमें भूमिका का प्रदान करना।

3. अभिवृत्ति

पर्यावरण को लिए लोगों के सामाजिक मूल्य तथा इसके प्रति प्रबल भावना और इसके बचाव तथा सुरक्षा की समझ।

4. चतुराई

इस प्रकार कि समस्याओं को सुलझाने के लिए लोगों में चतुरता उपजित करने में सहायता प्रदान करना।

5. मूल्यांकन क्षमता

पर्यावरणीय मूल्यों तथा पारिस्थिती की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक सौन्दर्यबोध तथा शैक्षिक कारकों का मूल्यांकन।

6. भागीदारी

पर्यावरण समस्याओं के तहत् उलझनों के सन्दर्भ में लोगों को जिम्मेदारी का अहसास कराना।

यूनेस्को की रिपोर्ट (1974) के अनुसार पर्यावरणीय शिक्षा संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने का मार्ग हैं, न विज्ञान की कोई अलग शाखा या अध्ययन हेतु कोई विशिष्ट् विषय।

इसी के अन्य प्रकाशन लिविंग इन द एनवायरमेंट ए सोर्सबुक फार एनवायरमेंट एजुकेशन में पर्यावरण शिक्षा के बारे में कहा गया है।

1.3 राष्ट्रीय दस्तावेज एवं पर्यावरण शिक्षा

सन् 1964-66 में डॉ. कोठारी की अध्यक्षता में पर्यावरण शिक्षण का उद्देश्य भौतिक एवं जैविक पर्यावरण के मुख्य तथ्यों अवधारणाओं और प्रक्रियाओं के बारे में उचित ज्ञान देना है।

पर्यावरण शिक्षा पर दिल्ली में द्वितीय अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन 1985 आयोजित हुआ जिसमें इससे पहले आयोजित पर्यावरण तथा पर्यावरण शिक्षा पर अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन के आधार पर प्रमुख विचार प्रस्तुत किये गये।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) भी शिक्षण और पर्यावरण का महत्व माना जाता हैं कि पर्यावरण के प्रति बालक-बालिकाओं में अभिवृत्ति पैदा करना बहुत जरूरी है।

संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1992) में पर्यावरण शिक्षा की महत्ता को प्रकट करते हुए कहा हैं कि "पर्यावरण के प्रति जागरूकता बच्चों से लेकर समाज के सभी आयु वर्गो एवं क्षेत्रों में फैलानी चाहिए। इसे शिक्षा की पूरी प्रक्रिया में समाहित किया जावेगा।

तर्कपूर्ण रीति से सोचने, परिणाम निकालने और अधिक ऊंचे स्वर के निर्णय देने की योग्यता के साथ-साथ ज्ञान की प्राप्ति पर बल

देना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 के अनुसार बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना पाठ्यचर्या का महत्वपूर्ण सरोकार है।

1.4 भारत वर्ष में पर्यावरण शिक्षा

सन् 1985 में केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने पर्यावरण शिक्षा के लिए योजना का सूत्रपात किया जिसकी रचना पर्यावरण और उसकी सुरक्षा के प्रति जन चेतना जाग्रत करने के लिये की गयी हैं। उसी समय से पर्यावरण और वन मंत्रालय विभिन्न पर्यावरण व वानिकी कार्यक्रमों तथा भारत सरकार के प्रशासनिक ढांचों में एक केन्द्रीय बिंदु के रूप में कार्य कर रहा हैं। मंत्रालय का देश में 'संयुक्त' राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) तथा अन्तराष्ट्रीय समन्वित पर्वत विकास केन्द्र (ICIMOP) का केन्द्रीय एजेंसी के रूप में नामित किया गया हैं और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण विकास सम्मेलन (UNCEP) के अनुवर्ती कार्यक्रमों का ध्यान देता हैं।

भारत सरकर ने सभी पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यावरण शिक्षा के लिए विशेष बजट का प्रावधान किया है। विद्यालयों में पर्यावरण उन्मुख योजना के लिए 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। राज्यों को योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए शत प्रतिशत सहायता प्रदान करने का प्रावधान है। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय में शैक्षिक पाठ्यक्रमो में पर्यावरण

शिक्षा को अलग से तथा एक अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करने के लिए औपचारिक शिक्षा में सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण पहल की है।

मंत्रालय अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा को भी प्रोत्साहन देता हैं जो कि समाज के सभी वर्गो में अभिवृत्ति उत्पन्न करने के लिए प्रयासरत हैं वह गोष्ठियां, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, श्रव्य दृश्य कार्यक्रमों आदि का भी आयोजन करता है।

मंत्रालय द्वारा पर्यावरण विज्ञान तथा प्रबंध के प्राथमिकता वाले क्षेत्र में अभिवृत्ति , ज्ञान, अनुसंधान प्रशिक्षण सुविधाओं को मजबूत बनाने के उत्कृष्ट केन्द्र खोले गए है। जिसमें पर्यावरण के क्षेत्र में पर्यावरण शिक्षा केन्द्र अहमदाबाद सी.पी.आर. शिक्षा केन्द्र चेन्नई प्रमुख है।

भारतवर्ष के अन्तराष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा से नई दिल्ली में सन् 1983 में NCERT और IEEP की संयुक्त कार्यगोष्ठी, पर्यावरण शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण सन् 1985 में संयुक्त पर्यावरण शिक्षा का परामर्शी बैठक सन् 1987 मे NCERT और IEEP का एशियाई क्षेत्र के लिए संयुक्त उपक्षेत्रीय सेंमिनार सन् 1989 में 'पर्यावरण शिक्षा' के लिए अंत क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होते रहे।

पर्यावरण शिक्षा पर दिल्ली में द्वितीय अंतराष्ट्रीय कांफ्रेस 1985 आयोजित हुआ जिसमें इससे पहले आयोजित पर्यावरण तथा

पर्यावरण शिक्षा पर अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंसों के आधार पर प्रमुख विचार प्रस्तुत किया गया।

वर्ष 1993 में दिल्ली में 'ग्लोबल फोरम' फार एनवायरमेट एजुकेशन का सेमिनार आयोजित हुआ जिसमें यूनेस्कों के पर्यावरण शिक्षा प्रभाग प्रमुख डॉ. अब्दुल गफर गजनवी ने कहा कि आज आवश्यकता पर्यावरण की राष्ट्रीय योजना और व्यूह रचना विकास की है। मनुष्य पर्यावरण का एक अभिन्न अंग हैं तथा पर्यावरण परिवर्तन की प्रमुख कारक भी है। पर्यावरण और विकास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पर्यावरण शिक्षा पर राजैतिक निर्णय लेने कि आवश्यकता है।

1.5 विश्व स्तर पर पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति

सन् 1972 में स्टाकहोम में आयोजित संयुक्तराष्ट्र सम्मेलन 'मानव पर्यावरण' में संपूर्ण विश्व का ध्यान निरन्तर गति से नष्ट होते पर्यावरण की ओर आकर्षित किया गया। इस सम्मेलन का प्रमुख केन्द्र बिन्दु प्राकृतिक संपदाओं के निरंतर विनाश और औद्योगीकरण द्वारा उत्पन्न प्रदूषण मानव के जीवन के स्तर तथा उत्तरजीविका का खतरा था इस सम्मेलन में ''बहुमूल्य पर्यावरण'' को सुरक्षित रखने के उपायों पर बल दिया गया तथा उपाय ढूढ़ने का भी प्रयास किया गया ।

संयुक्तराष्ट्र सम्मेलन के फलस्रूप ''संयुक्तराष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम'' (UNITED NATIONS ENVIORNMENT PROGRAME, **UNEP**) की स्थापना हुई।

इसी क्रम में 1983 ''पर्यावरण और विकास'' पर ''विश्व आयोग'' (WORLD COMITION) को नियुक्त किया गया। जिसमें आर्थिक विकास के साथ–साथ पर्यावरण संबंधी प्रकरणों को ब्राजील के रिओ डि–जेनिरियो (RIO DEJANERIO) में सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन पर्यावरण और विकास पर आयोजित हुआ। जिसें अर्थ समिट (EARTH SUMMIT,S2) कहते है। यह सम्मेलन पर्यावरण और विकास पर आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में पृथ्वी के भविष्य पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। इस अधिवेशन के फलस्वरूप एक दीर्घकालीन विकास प्रारंभ करने का प्रस्ताव एजेन्डा पारित हुआ। सन् 1995 से संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सम्मेलन ने ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने की दृष्टि से 'अमीर देशों' को अपनी तकनीकी गरीब और विकासशील देशों को प्रदान करने का आग्रह किया।

संयुक्त राष्ट्र में अपने पर्यावरण से संबंधित प्रशिक्षण और पर्यावरण बोध संबंधी कार्यक्रमों के पूर्वमूल्यांकन प्रारंभ किया तथा विद्यालयों महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में पर्यावरण और विकास कार्यक्रमों को सम्मलित करने पर बल दिया।

विश्वस्तर पर 1977 में आयोजित इंटर गवर्नमेंटल कांफ्रेंस में पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य निम्न प्रकार निर्धारित किए गए है।

1. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में आर्थिक, राजनीतिक पारिस्थितिक अन्तःनिर्भरता का ज्ञान तथा तत्संबंधी अभिवृत्ति का प्रसार करना।

2. प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण तथा उनके विकास संबंधी ज्ञान मूल्य अभिवृत्ति, प्रतिबद्धता तथा कुशलता अर्जित करने का अवसर प्रदान करना ।

3. पर्यावरण के संदर्भ में अन्तःवैयन्तिक, सामूहिक तथा सामाजिक स्तर पर व्यावहारिक चेतना का सृजन करना।

1.6 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

पर्यावरण शिक्षा अथवा पर्यावरण अध्ययन एक नया अधिगम क्षेत्र हैं इसका विषय अपनी विकासावस्था में है। संभवतः इसी कारण इसका अधिगम क्षेत्र अभी तक पूरी तरह से निश्चित नहीं हो पाया।

वस्तुतः पर्यावरण अध्ययन तीन अर्थो में प्रयुक्त किया जाता हैं पर्यावरण के लिए अध्ययन, पर्यावरण के बारे में अध्ययन, शिक्षण के बारे में अध्ययन इसका संबंध सामाजिक समस्याओं से दूसरे अर्थ में पर्यावरण का संबंध विषय वस्तु से, तीसरे अर्थ में इसका संबंध इसे शिक्षण साधन के रूप में प्रयुक्त करने से है। ऐसी आशा की जाती है कि पर्यावरण अध्ययन से विद्यार्थी मे ऐंसे

विचारों, मूल्यों, रूपों तथा कुशलताओं का विकास होगा जो अन्य परिवेशों को समझने में सहायक होगा।

पिछले चार दशक में विज्ञान में वृद्धि तथा अन्य अविष्कारों वैश्वीकरण से विशाल विश्व छोटे स्वरूप में बदल गया हैं। तकनीकी के विकास पर्यावरण प्रदूषण और परस्थिति के बारे में संसार के सभी समुदायो द्वारा गंभीर चिंता व्यक्त की जा रही है। 14-16 वर्ष की उम्र के सभी बच्चों को शिक्षा देने के संवैधानिक निर्देश को मूर्त रूप देने के प्रयास से स्थानीय जीवन में पर्यावरण का वास्तविक महत्व उभर रहा हैं। शिक्षा को अपने व्यावहारिक जीवन से जोडने तथा उसे जीवन उपयोगी बनाने के प्रयास भी अनिवार्य रूप से बच्चों के आसपास पर्यावरण की ओर बराबर ध्यान आकृष्ट किया है। इन विभिन्न धारणाओं की शिक्षा में पर्यावरण के महत्व को विवाद से परे बना दिया है। यही कारण हैं कि पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं शिक्षाविदों ने पर्यावरण को प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अभिन्न अंग के रूप में स्वीकृत किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने भी शिक्षा ओर पर्यावरण का महत्व माना हैं। पर्यावरण के प्रति बालक, बालिकाओं में अभिवृत्ति एवं ज्ञान पैदा करने में बहुत जरूरत है। यह ज्ञान एवं अभिवृत्ति मात्र विद्यार्थियों तक ही सीमित नहीं रही वरन् समाज के सभी आयु वर्ग और क्षेत्रों में भी इसका विस्तार होना चाहिए। प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों को विषयों का समन्वय करके पढ़ना सुग्राही रहता हैं। प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण के बारे में समुचित ज्ञान प्राप्त होने

पर पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझना हैं पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा जीवन मूल्यों का विकास होता हैं। विद्यार्थी अपने क्रियाकलापों द्वारा अपने वातावरण के प्रति उचित आचरण का परिचय दे तभी पर्यावरणीय शिक्षा सार्थक हैं।

प्रत्येक बालक का संपर्क पर्यावरण से प्रत्यक्ष रूप में होता हैं। इस कारण से वर्तमान समय में पर्यावरण का विद्यार्थी एवं विद्यार्थी का पर्यावरण पर प्रभाव भी प्रत्यक्ष रूप से पड़ रहा है। आज जबकि संपूर्ण विश्व में पर्यावरण गंभीरता से सर्वोच्च समस्या होकर भी खोती जा रही है तब वर्तमान समय में इस बात पर शोध करना आवश्यक हो गया हैं कि वो कौन से कारण हैं जिससे विश्व को इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। केवल संरक्षण के नियम बनाकर पर्यावरण संबंधी समस्याओं को हल नहीं किया जा सकता हैं। इसे हल करने हेतु हमें विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति व आचरण को जानना आवश्यक होगा हैं कि उनका आचरण पर्यावरण के प्रति किस प्रकार का हैं। यदि वर्तमान व्यवस्था व पाठ्यक्रम उनका आचरण परिवर्तित कर सके तो हम अपने समस्त वातारण को प्रदूषित होने एवं नष्ट होने से बचा सकेगें।

इस अध्ययन में पर्यावरणीय शिक्षा में पर्यावरण और विद्यार्थियों के पारस्पारिक संबंधों के क्रियाकलापों, पर्यावरण के बारे में जानकारी कौशल का विकास किस सीमा तक हुआ है यह जानने हेतु प्रस्तुत अध्ययन कि आवश्यकता महसूस कि जाती है।

1.7 समस्या का कथन

कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण अभिवृत्ति एवं आचरण का अध्ययन

1.8 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

पर्यावरण – उन सभी दशाओं प्रणियों तथा प्रभारों का योग है जो जीवों व उनकी प्रजातियों के विकास जीव तथा मृत्यु को प्रभावित करता हैं। पर्यावरण भौतिक तथा जैविक पारिस्थितिकी का सम्मिलित आवरण हैं। जीवों व जन्तुओं तथा पेड़ पौधों की उत्पत्ति तथा वृद्धि को सीमित करता है।

पर्यावरण अभिवृत्ति

पर्यावरण के प्रति समाज के विभिन्न वर्गो के लोगों में सामाजिक मूल्यों तथा इसके प्रति प्रबल भावना, बचाव, सुरक्षा की समझ एवं सकारात्मक, नकारात्मक पक्षों के प्रति संवेदनशील बनाना ही पर्यावरणीय अभिवृत्ति हैं।

पर्यावरण आचरण

पर्यावरण को व्यवहार में लाना एवं उसका पालन करना ही पर्यावरण आचरण है।

1.9 उद्देश्य

1. कक्षा 6 वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति का अध्ययन ।

2. कक्षा 6 वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति आचरण का अध्ययन।

1.10 परिकल्पनाएँ

1. कक्षा 6वीं के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. कक्षा 6वीं के छात्र, छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.11 अध्ययन का सीमांकन

1. अध्ययन में सिर्फ कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों को शामिल करना।

2. इस अध्ययन में मात्र कक्षा 6वीं विद्यार्थियों को शामिल किया हैं, जिसमें 30 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से तथा 30 शहरी क्षेत्र से है।

3. इस अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं दोनो का ही चयन किया है।

4. बाहरी कारकों पर ध्यान न देना जो अध्ययन को प्रभावित करते हैं।

5. अध्ययन की समय सीमा निर्धारित होना ।